P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4* July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

ई–सूचना स्रोतों के उपयोग में कृषि विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका

विनोद कुमार अहिरवार
पुस्तकालयाध्यक्ष एवं प्रभारी,
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग,
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,
दुर्ग छ. ग.

सारांश

भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है, क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है। उन्नत और उत्कृष्ट कृषि के लिये यह आवश्यक है, कि कृषि शिक्षा उन्नत, प्रगतिशील और उत्कृष्ट हो। भारत में कृषि शिक्षा प्राचीन काल से उत्कृष्ट रही है। वर्तमान में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं इसका अंग कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग भारत में कृषि शिक्षा हेतु मापदण्ड एवं आदर्श निर्धारित करते है। इन्हीं के निर्देशानुसार कृषि विश्वविद्यालय में पुस्तकालयाध्यक्ष एवं पर्याप्त ग्रंथालय कर्मचारी एवं मुद्रित एवं ई–सूचना स्रोत से सुज्जित पुस्तकालय का होना अनिवार्य है। वर्तमान युग में चूकि सूचनाओं का प्रकाशन अत्याधिक बढ़ गया है, कारण कृषि, वानिकी एवं संबद्ध विषय क्षेत्रों में उत्कृष्ट शिक्षा हेतु विद्यार्थियों, प्राध्यापकों, शोधार्थियों एवं वैज्ञानिकों को सूचनाये उपलब्ध कराने की दृष्टि से ई–सूचना स्रोतों का अपना विशिष्ट महत्व है। ई–सूचना स्रोतों के उपयोग से संबंधित सभी संभव प्रयास पुस्तकालयाध्यक्षों द्वारा किये जाते है व इसके फलस्वरूप भारत मे उत्कृष्ट कृषि शिक्षा एवं समाजोपयोगी अनुसंधान हो रहें। इन अनुसंधान कार्यो की सहायता से कृषि उत्पादन को बढ़ाने एवं भारत की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार कृषि विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्ष भारत की उन्नति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

मुख्य शब्द : कृषि विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्रोत, ई पुस्तकें , ई–शोध पत्रिका, ई–शोध प्रबंध, ई–रिपोजिटरी, कृषि, कोश, ऐग्रीकेट, एग्रिस, एग्रीकोला, कृषि शिक्षा, कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्षता।

प्रस्तावना

वर्तमान युग सूचना विस्फोट का युग है। सूचनायें बहुत तेजी से प्रकाशित हो रहीं हैं। इन सूचनाओं को मुद्रित रूप में वर्तमान में प्राप्त करना अत्यन्त दुर्लभ कार्य हो गया है। इसी दुर्लभता के कारण ई–सूचना स्रोतों का उद्भव हुआ है। इन सूचना स्रोतो से सूचनाओं को तेजी से खोजना आसान होता है एवं मुद्रित सूचना स्रोतों के लिये आवश्यक अधिक स्थान भी आवश्यक नहीं होता है। इन सूचना स्रोतों को पुस्तकालय अपने उपयोगकर्ताओं को कम्प्यूटर नेटवर्किंग एवं इंटरनेट की सहायता से सप्ताह के 7 दिन एवं चौबीस घंटे उपलब्ध करा सकतें हैं। इस प्रकार मुद्रित सूचना स्रोतों की तुलना में ई–सूचना स्रोतों से सूचना पुनः प्राप्ति अधिक तीव्र होती है। यही कारण है, कि अधिकतर शैक्षणिक पुस्तकालय इन ई–सूचना स्रोतों को अपने संग्रह में सम्मिलित कर रहें है। वर्तमान सूचना विस्फोट के युग में सूचना पुनःप्राप्ती हेतु ई–सूचना स्रोत अस्त्रों–शस्त्रों की भांति उपयोग हो रहें है। अन्य सभी विषय क्षेत्रों के समान कृषि विज्ञान एवं उसके सम्बद्व विषय क्षेत्रों के उच्चत्तर शैक्षणिक संस्थानों के ग्रंथालय ई–सूचना स्रोतो की उपलब्धता एवं सूचना पुनःप्राप्ति हेतु अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहें हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं :

1. कृषि विज्ञान तथा संबंधित विषयों में इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्रोतो की उपलब्धता का अध्ययन।
2. कृषि विश्वविद्यालयों में उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी का अध्ययन करना।
3. कृषि विज्ञान तथा संबंधित विषयों के इलेक्ट्रॉनिक स्रोतों तथा संसाधनों तथा इनकी उपयोगिता का अध्ययन करना।
4. इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्रोतों की उपयोगिता में कृषि विश्वविद्यालयीन पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका का अध्ययन।

5. कृषि विज्ञान एवं संबद्ध विषयों की शिक्षा एवं अनुसंधान की उत्कृष्टता पर इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्रोतों की उपयोगिता के प्रभाव का अध्ययन।

साहित्यावलोकन

Singh Pravin Kumar and Prasad H N (2010) प्रस्तावित शोध कार्य के क्षेत्र में यह एक महत्वपूर्ण योगदान है। इस शोध कार्य के माध्यम से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के ई–संसाधनों का मूल्यांकन तथा विभिन्न प्रकार के ई–संसाधनों के उपयोग तथा सेवाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। लेखकों ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के वैज्ञानिकों के द्वारा विभिन्न प्रकार के ई–सूचना स्रोतो की उपयोगिता एवं प्रभाव का अध्ययन किया है।

Thiyam Satyavati Devi and Nkosinathi N K (2014) लेखकों के द्वारा कृषि विज्ञान के विद्यार्थियों के सूचना खोज व्यवहार का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन एक केस स्टडी है। जिसमें स्वाजिलेंड विश्वविद्यालय के कृषि के विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा प्राध्यापकों से प्रश्नावली के माध्यम से उनकी सूचना खोज प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र के द्वारा प्राध्यापकों के साथ–साथ विद्यार्थियों की सूचना खोज प्रवृत्ति को सुधारने के लिये महत्वपूर्ण जानकारियां दी गयी हैं। यह शोध पत्र निश्चित ही कृषि विश्वविद्यालयीन पुस्तकालयाध्यक्षता हेतु उपयोगी है।

Natrajan (2012) ने विभिन्न प्रकार के ई–सूचना स्रोतों के बारे में सारगर्भित जानकारी दी तथा विद्यार्थियों शोधार्थियों तथा प्राध्यापकों के सूचना खोज व्यवहार का अध्ययन किया। ग्रंथालय के कर्मचारियों उपयोगकर्ता को ई–सूचना स्रोतों के उपयोग में सहयोग पर भी प्रकाश डाला है। इस अध्ययन में विभिन्न पाठक समुदाय के सूचना खोज व्यवहार का अध्ययन ई–सूचना स्त्रोतों के संदर्भ में किया गया है।

Deshmukh P. P. (2012) ने अपने शोध लेख में कृषि विश्वविद्यालयों में पुस्तकालयों का विकास एवं उनके कार्यो का अध्ययन किया है। बदलते परिदृश्य में कृषि विश्वविद्यालयीन पुस्तकालयाध्यक्षों की बदलती भूमिका एवं बदलती तकनीकी के हस्तांतरण में भूमिका का अध्ययन एवं इसका कृषि विज्ञान के क्षेत्र में होने वाले अनुसंधान कार्यो पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है।

Bansal, Jivesh (2011) ने अपने शोध लेख में हरियाणा राज्य के भाकृअप के छः पुस्तकालयों में पुस्तकालयों में आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग एवं इसमें पुस्तकालयाध्यक्षों एवं पुस्तकालय कर्मचारियों की भूमिका का अध्ययन किया है।

Day, Nabin Chandra (2017) ने अपने शोध प्रबंध में कृषि विश्वविद्यालयों के ग्रंथालयों में ई–कन्सोरटिया के माध्यम से ई–सूचना स्रोतों की उपयोगिता में कृषि विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका का उल्लेख किया है। पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता पर भी सारगर्भित जानकारी दी है। संबंधित शोध का क्षेत्र उत्तर–पूर्व के कृषि विश्वविद्यालय, विशेष रूप से केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल मणिपुर है।

Uplaonkar, Shilpa(2018) लेखक ने अपने शोध लेख में धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के द्वारा ई–सूचना स्रोतों की उपयोगिता का अध्ययन किया गया है, एवं पुस्तकालय में इस हेतु उपयोग होने वाली सूचना प्रौद्योगिकी के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है, एवं इस हेतु पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका का भी उल्लेख किया गया है।

Ankrah, Ebenezer and Atuase, Diana (2018) लेखकों ने अपने शोध लेख में केपस् विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान के स्नातकोत्तर विद्यार्थियो की ई–सूचना खोज प्रवृत्ति का अध्ययन किया है। ई–सूचनाये खोजने में पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला है। उदत प्रकाशित राज्य कृषि विद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका को लेकर पूर्ण अध्ययन नहीं महात्मा क्षमता, प्रस्तुत शोध पत्र में इस कमी को पूरा करने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रविधि

इस शोध लेख से संबंधित तथ्यों एवं सूचना को लेने हेतु प्राथमिक तथा द्वितीयक सूचना स्रोतों का अवलोकन किया गया है। कृषि विज्ञान एवं संबद्ध विषयों के संस्थानों की बेबसाईट का भी अवलोकन किया गया है। इस प्रकार तथ्यों को एकत्र करने का मुख्य आधार मुद्रित सूचना स्रोत एवं ई–सूचना स्रोत तथा विभिन्न शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थानो की वेबसाइट हैं।

कृषि विज्ञान

कृषि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं जन्तु विज्ञान विषयों का एक बृहत बहुविषयी क्षेत्र है। सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों से निपटने के लिये जन उपयोगी वनस्पतियों एवं जीवों का उत्पादन करने हेतु अध्ययन, अध्यापन एवं शोध कार्य कृषि विज्ञान के अर्न्तगत किये जाते है। कृषि विज्ञान के अर्न्तगत मानव उपयोगी पशुधन एवं वनस्पतियों का उत्पादन बढ़ाने हेतु सभी उपायों एवं तकनीक को अध्ययन हेतु सम्मिलित किया जाता है। कृषि विज्ञान में न केवल इनके उत्पादन को बढ़ाने हेतु प्रयास किये जाते हैं, बल्कि इसके द्वारा उत्पन्न उपजों के प्रसंस्करण, भंडारण एवं वितरण से संबंधित सभी पक्षों को सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार से कृषि विज्ञान के अन्तर्गत मुख्य रूप से कृषि विज्ञान, उद्यानिकी, कृषि अभियांत्रिकी, कृषि व्यवसाय, कृषि व्यवसाय प्रबंधन, पशु पालन, पशु चिकित्सा विज्ञान, पादप प्रजनन एवं आनुवांशिकी, डेयरी, विज्ञान, मत्स्की, वानिकी, सामाजिक वानिकी, पर्यावरण सरक्षण, जैव प्रौद्योगिकी इत्यादि विषयों का सम्मिलित अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान कार्य होता है।

इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्रोत

इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्रोतों में सूचनायें इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में होती हैं। इन सूचना स्रोतों से सूचनायें पुस्तकालय जाये बगैर ही प्राप्त की जा सकती हैं। इनसे सूचना प्राप्त करने के लिये समय का बंधन भी नहीं रहता। अधिकतर शैक्षणिक पुस्तकालय इन सूचना स्रोतों को अपने उपयोगकर्ताओं को सप्ताह के सातों दिवस 24 घंटे उपलब्ध करा रहे है। इन सूचना स्रोतों से संसाधन सहभागिता आसान हो गई। इसी कारण ही

ई–कनसोरटियम की आवधारणा का उद्‌भव हुआ। ई–कनसोरटियम के माध्यम से पुस्तकालयों को कम धन राशि में बहुमूल्य सूचना स्रोतों को उपलब्ध कराना आसान हो गया है।

ई–सूचना स्रोतों के प्रकार

ई–पुस्तकें

इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों में सूचनायें इलेक्ट्रॉनिक फार्मेट में होती है। इनको पढ़ने के लिये किसी कम्प्यूटरीकृत उपकरण की आवश्यकता होती है। इनको मोबाईल फोन, टेबलेट, लेपटाप इत्यादि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की सहायता से पढ़ा एवं डाउनलोड किया जा सकता है।

ई–शोध पत्रिकायें

वर्तमान अनेक शोध पत्रिकाओं को मुद्रित स्वरूप में प्रकाशित करना बंद ही कर दिया है, इसके स्थान पर उनको इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में प्रकाशित किया जा रहा है इससे प्रकाशित होने वाले शोध लेखों को शोधार्थियो, वैज्ञानिकों एवं विषय विशेषज्ञ तीव्रता से खोज सकते है।

ई–संदर्भ स्रोत

अनेक प्रकार के संदर्भ स्रोत जैसे शब्दकोष, विश्वकोश, निर्देशिकायें, भौगोलिक सूचना स्रोत, इत्यादि को ई–स्वरूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इनसे संदर्भ सूचना सहजता एवं तीव्रता से प्राप्त की जा सकती हैं।

ई–समाचार पत्र

ई–समाचार पत्रों को आन लाईन समाचार पत्र भी कहा जाता है। इनकों वर्ल्ड वाईड बेब अथवा इन्टरनेट की सहायता से देखा जा सकता है।

ई–पत्रिका

प्रत्येक शैक्षणिक पुस्तकालयों में पत्रिकाएँ संग्रह का मुख्य अंश होती है। पत्रिकाओं के मुद्रित अंकों को रखने हेतु अधिक स्थान की आवश्यकता होती है, परन्तु ई–पत्रिकाओं से स्थान संबंधी समस्या नहीं होती।

अनुक्रमणिकरण एवं सारकरण सेवा

इन सेवाओं के द्वारा शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध लेखों के ग्रंथपरक विवरण के साथ–साथ शोध लेखों का सार भी दिया जाता है।

ई–शोध प्रबंध एवं ई–लघु शोध प्रबंध

शोध प्रबंधों एवं लघु शोध प्रबंधों का संग्रह भी ग्रंथालय में बहुत अधिक स्थान लेते हैं। इसके निराकरण हेतु इनके ई–स्वरूप को महत्व दिया जा रहा है। भारत में पुस्तकालय एवं सूचना नेटवर्क की परियोजना शोधगंगा के माध्यम से ई–शोध प्रबंध एवं लधु शोध प्रबंध उपलब्ध हो रहे हैं।

ई–प्रतिवेदन

शोधकर्ताओं एवं वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान कार्य के निष्कर्षो से संबन्धित प्रतिवेदनों को इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में प्रकाशित किया जाता है, इसी को ई– प्रतिवेदन कहते हैं।

ई–क्लिपिंग (कतरने)

संदर्भ के रूप में अनेक बार पूर्व में प्रकाशित सूचनाओं को देखना भी अनिवार्य रहता है। ई–क्लिपिंग के माध्यम इन सूचनाओं को संग्रहित किया जाता है।

ई–रिपोजिटरी

संस्थागत रिपोजिटरी को इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में बदलकर ई–रिपोजिटरी बनायी जा सकती है। इसको मासिक आधार पर अद्यतन किया जा सकता है। इससे किसी संस्था की बौद्विक सम्पदा संबंधित सूचनायें खोजना आसान रहता है।

ई–सूचना स्रोतों का लाभ

ई–सूचना स्रोतो का सबसे बड़ा लाभ यह है, कि यह सूचना स्रोत एक साथ अधिक उपयोगकर्ता के लिये अभिगम्य होते है। इन सूचना स्रोतों का प्रकाशन मुद्रित सूचना स्रोतों से अधिक प्रभावी होता है। इन सूचना स्रोतों में पाठ्य सामग्री के साथ–साथ दृश्यों एवं श्रव्यों का उपयोग किया जा सकता है एवं इनसे सूचनायें खोजने में बहुत कम समय लगता है। इनका सबसे अधिक लाभ यह है, कि इन सूचना स्रोतों से सूचनायें प्राप्त करने के लिये पुस्तकालय जाना अनिवार्य नहीं होता, एवं सूचनायें सप्ताह के सातों दिन चौबीस घंटे प्राप्त की जा सकती है। इन सूचना स्रोतों के लिये अधिक स्थान की भी आवश्यकता नहीं होती।

विभिन्न प्रकार के ई–सूचना स्रोत जैस– अनुक्रमणिकायें, डाटाबेस, ई–पुस्तकें, ई–संदर्भ ग्रंथ, ई–पत्रिकायें, ई–समाचार पत्र, ई–शोध पत्रिकायें तथा ई–कान्टेन्ट इतने अधिक उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं कि आज इनके बिना अनुसंधान कार्य संभव ही नहीं है। चूंकि इन सूचना स्रोतों के उपयोग के लिये मंहगे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण कम्प्यूटर, लेपटॉप, टेबलेट या मोबाईल फोन की आवश्यकता होती है, इसीलिये भारत में अनेक प्रदेशों की सरकार द्वारा ई–संसाधनों का लाभ देने के उद्‌देश्य से विद्यार्थियों को इन उपकरणों को निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है।

कृषि, वानिकी एवं सम्बद्ध विषयों में ई–सूचना स्रोत :

कृषि, वानिकी एवं सम्बद्व विषय क्षेत्रों में नवीनतम अनुसंधान तथा विकास से अवगत कराने के उद्‌देश्य से सूचना सेवायें अति महत्वपूर्ण होती हैं। अधिकतर कृषि विश्वविद्यालय तथा अन्य कृषि शोध संस्थान ई–सूचना सेवायें उपलब्ध कर रहे हैं। इन्टरनेट तथा वाई–फाई की सुविधा, ई–कन्सोरटिया, ऑनलाईन पब्लिक ऐक्सेस कैटलॉग, ऑनलाईन थीसिस इत्यादि की सेवायें आज के इस इलेक्ट्रॉनिक युग में अनिवार्य हो गयी हैं। कन्सोरटिया फॉर ई रिसोर्सेस इन एग्रीकल्चर (CeRA Project) की शुरूआत सन् 2007 में की गयी।

इन सभी सेवाओं के अलावा कृषि विश्वविद्यालय तथा कृषि शोध संस्थान अपने पाठकों को अपने सूचना संसाधनों से अवगत कराने के उद्‌देश्य से ऑनलाईन पब्लिक ऐक्सेस कैटलॉग तथा वेब ऑनलाईन पब्लिक ऐक्सेस कैटलॉग की सुविधा भी देती हैं। कृषि, वानिकी एवं सम्बद्ध विषयों में ई– सूचना स्रोत उपलब्ध कराने के उद्‌देश्य से राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर उपयोगी सूचना सेवाये संचलित हो रही है। कुछ महत्वपूर्ण सूचना सेवायें इस प्रकार हैः

कन्सोरटिया फॉर ई रिसोर्सेस इन एग्रीकल्चर (CeRA Project)

समाज की आर्थिक उन्नति हेतु कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान आवश्यक है, इन्हीं अनुसंधान कार्यो में संलग्न कृषि वैज्ञानिक एवं अनुसंधानकर्ताओं को उनके समय को बचाते हुये आवश्यक सूचनायें एवं सूचना स्रोत उपलब्ध कराना अनिवार्य है। इसी उद्देश्य को पूरा करने हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि ज्ञान प्रबंधन निदेशालय, नई दिल्ली के तत्त्वाधान में कन्सोरटिया फार ई रिसोर्सेस इन एग्रीकल्चर परियोजना (CeRA Project) को सन् 2007 में प्रारंभ किया गया।

कृषि कोश

कृषि कोश कृषि विज्ञान एवं उससे संबद्ध विषयों में उपलब्ध पुस्तकों, प्रबंध, पुरानी शोध पत्रिकाओं, शोध लेखों, शोध प्रबंधों, लघु शोध प्रबंधों, सम्मेलनों की कार्यवाही, वार्षिक प्रतिवेदनों, पम्पलेट, विवणिका, प्रचार पुस्तिका, ग्रे–साहित्य इत्यादि में उपलब्ध ज्ञान की डिजीटल रिपोजिटरी है। कृषि कोष को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की परियोजना नेशनल एग्रीकल्चर इनोवेटिव प्राजेक्ट (NAIP) की उप परियोजना नेशनल एग्रीकल्चर रिसर्च एण्ड एजुकेशन सिस्टम (NARES) के अन्तर्गत प्रारंभ किया गया । कृषि कोष को बेवसाइट http://krishikosh.egranth.ac.in/ के माध्यम अभिगम्य किया जा सकता है।

कृषिप्रभा

कृषिप्रभा भारत के कृषि एवं संबद्ध विषयों की रिपोजिटरी है। इसमें भारतीय राज्य कृषि विश्वविद्यालय एवं अन्य समविश्वविद्यालयों के शोध प्रबंधों को सम्मिलित किया गया है। इस रिपोजिटरी को नेहरू पुस्तकालय, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के द्वारा संकलित किया गया। इस रिपोजिटरी को वित्तीय सहायता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, की राष्ट्रीय कृषि नवाचार परियोजना द्वारा दी गयी। इस रिपोजिटरी में 45 राज्य कृषि विश्वविद्यालयों एवं समविश्वविद्यालयों के डॉक्टोरल शोध प्रबंध सम्मिलित हैं। इसके माध्यम से ई–शोध प्रबंधों एवं ई–लघु शोध प्रबंधों का अभिगम केम्पस के अन्दर करने के लिये बेबसाइट http://14.139.232.167:8080/equestthesis/ से किया जा सकता है।

ऐग्रीकेट

ऐग्रीकेट भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की 12 प्रमुख पुस्तकालयों एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के संग्रह की संघीय प्रसूची है। ऐग्रीकेट भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की राष्ट्रीय कृषि नवाचार परियोजना के अन्तर्गत संचलित ई–ग्रंथ कन्सोरटियम परियोजना का भाग है। इसके माध्यम से कृषि विज्ञान एवं संबद्ध विषयों के उपयोक्ता अपने विषय से संबधित सूचना स्रोतों को कन्सोरटियम में सम्मिलित पुस्तकालयों एवं अन्य पुस्तकालयों से खोज सकते हैं। इस संघीय सूची एग्रीकेट के प्रमुख 12 पुस्तकालय– भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर बरेली उ.प्र., कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय बैंगरूलू, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर उत्तराखंड, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार हरियाणा, आचार्य एन. जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, लाम, गुंटूर आंध्रप्रदेश, राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान करनाल हरियाणा, केन्द्रीय मतस्यकी शिक्षा संस्थान, मुंबई, चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी महाराष्ट्र, तमिलनाडु पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, चेन्नई, तामिलनाडु, भारतीय ज्ञान प्रबंध निदेशालय (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद) सम्मिलित हैं।

एग्रीकेट कृषि एवं संबद्ध विषयों की एक संघीय प्रसूची है। इसके माध्यम इन विषयों के उपभोक्ता अपने सूचना स्रोतों की उपलब्धता के बारे में अन्य पुस्तकालयों से भी जान सकते हैं इसका अभिगम बेबसाइट http://www.egranth.ac.in/Agriat.html के माध्यम से कर सकते हैं।

एग्रिस (इन्टरनेशल सिस्टम फार एग्रीकल्चर सांइस एण्ड टेक्नोलॉजी)

यह कृषि विज्ञान, वानिकी एवं सम्बद्व विषयों के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय सूचना तंत्र है। इस शुरूआत सन 1975 में संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन (फूड एण्ड एग्रीकल्चर ऑर्गनाईजेशन) के माध्यम से कृषि, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में ज्ञान उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरूआत की गयी। इसके माध्यम से दस लाख से भी अधिक ग्रंथपरक अभिलेख उपलब्ध हैं। इससे सूचना स्रोतों के ग्रंथपरक विवरण बेबसाईट agris@fao.org के माध्यम से देखा जा सकता है।

एग्रीकोला

एग्रीकोला भी ग्रंथपरक डाटाबेस है। इसमें कृषि, वानिकी एवं संबद्व विषयों को सम्मिलित किया गया है। एग्रीकोल शोध लेखों, प्रोसीडिंग, शोध प्रबंध, अनुवाद, श्रव्य–दृश्य सामग्री, कम्प्यूटर सॉफ्टवेअर तथा तकनीकी प्रतिवेदन इत्यादि से संबंधित ग्रंथपरक डाटाबेस है। एग्रीकोला संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग के अर्न्तगत संचलित राष्ट्रीय कृषि पुस्तकालय का ग्रंथपरक डाटाबेस है। इसकों सन 1970 से प्रारंभ किया गया। इसको बेबसाइट http://agricola.nal.usda.gov के माध्यम से खोजा जा सकता है।

भारत में कृषि शिक्षा

भारत में कृषि शिक्षा का अपना एक गौरवशाली इतिहास रहा है। भारत की 80 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर रहकर अपना जीवन–यापन करती है। भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। अच्छी कृषि तथा अच्छी पैदावार के लिये कृषि शिक्षा अति आवश्यक है। स्वतंत्रता के बाद हमारा देश भुखमरी की कगार पर था परन्तु हरित क्रांति ने इससे निजात दिलाई। हरित क्रांति ने तो हमारा जीवन ही बदल दिया। आज भारत प्रत्येक क्षेत्र के साथ खाद्यान्न की उपलब्धता में आत्मनिर्भर ही नहीं अपितु आज कृषि के क्षेत्र में इतना विकास कर लिया है कि हम अब दूसरे देशों की सहायता भी कर रहे हैं। इन सभी विकास के पीछे हमारे देश में दी जाने वाली कृषि शिक्षा है।

कृषि से अधिक लाभ लेने के लिये कृषि में संलग्न हमारे मानव संसाधन तथा जनशक्ति को प्रशिक्षित

किया जाना अनिवार्य था। आज कृषि के विभिन्न क्षेत्रों जैसे–कृषि, कृषि अभियांत्रिकी, वानिकी, उद्यानिकी, पशु चिकित्सा, पशुपालन, डेयरी विज्ञान, फूड–टेक्नोलॉजी, मत्स्य विज्ञान, कृषि सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि व्यवसाय पाठ्यक्रम इत्यादि से संबंधित शिक्षा को डिप्लोमा, डिग्री, मास्टर तथा डॉक्टोरल स्तर पर संचालित किया जा रहा है। वर्तमान में भारत में 71 कृषि विश्वविद्यालय, 05 डीम्ड कृषि विश्वविद्यालय एक केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय मणिपुर में स्थापित हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने 1952 में भारतीय कृषि शिक्षा परिषद का गठन किया। 1958 में प्रथम डीम्ड कृषि विश्वविद्यालय को स्थापित किया गया। इंडो–अमेरिकन कृषि विशेषज्ञों के दल ने 1960 में पंतनगर में राज्य कृषि विश्वविद्यालय को स्थापित करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। 1965 में एजुकेशन पेनल के स्थान पर कृषि शिक्षा पर एक पैनल का गठन किया गया। सन 1966 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कृषि शिक्षा से संबंधित आदर्शक अधिनियम भी बनायें। सन 1973 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च एण्ड ऐजुकेशन को स्थापित किया गया। 1995 में एग्रीकल्चरल ह्यूमन रिर्सोस डेवलपमेंट प्रोजेक्ट की शुरूआत विश्व बैंक की सहायता से की गयी।

मात्र कृषि शिक्षा में ही भारत आगे नहीं है अपितु हमारे देश ने कृषि अनुसंधान में भी नई ऊँचाईयों को छुआ है। आज कृषि अभियांत्रिकी के क्षेत्र में भारत के कृषि वैज्ञानिक विश्व का नेतृत्व कर रहे हैं। 1991 में भारत सरकार ने एक वृहद् परियोजना एग्रीकल्चरल रिसर्च इन्फॉरमेशन सिस्टम प्रारंभ करने का निर्णय लिया। इस परियोजना से कृषि वैज्ञानिकों को उनके द्वार पर सूचनायें उपलब्ध कराने का लक्ष्य रहता है, इसमें वित्तीय सहायता विश्व बैंक तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा मिलती है।

कृषि विश्वविद्यालयीन पुस्तकालयाध्यक्षता

कृषि से अधिक लाभ लेने के लिये यह आवश्यक है, कि इसमें संलग्न मानव संसाधन को प्रशिक्षित किया जाये। इस हेतु भारत में कृषि एवं इसके संबद्व विषय जैसै– कृषि अभियांत्रिकी, वानिकी, उद्यानिकी, पशु चिकित्सा, पशुपालन, डेयरी विज्ञान, फूड–टेक्नोलॉजी, मत्स्य विज्ञान, कृषि सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि व्यवसाय इत्यादि में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद विभिन्न स्तर के पाठ्यक्रम जैसे– डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर, एवं पीएच. डी. स्तर की शिक्षा को संचालित कर रहा है।

डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च एण्ड ऐजुकेशन विभाग के कृषि शिक्षा हेतु मानदण्डों के अनुरूप कृषि विश्वविद्यालयों में एक सुज्जित पुस्तकालय होना अनिवार्य है। पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष एवं अन्य सहायक कर्मचारी भी निर्धारित मानदण्ड के अनुसार होना नितांत आवश्यक है। इन शैक्षणिक संस्थानों के वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों के अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान कार्यो को पूर्ण करने हेतु पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती। वर्तमान डिजीटल युग में तो यह भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण है, इसी कारण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् एवं डिपार्टमेंट आफ एग्रीकल्चरल रिसर्च एण्ड एजुकेशन के मानदण्डों के अर्न्तगत विभिन्न स्तर की कृषि शिक्षा में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विषय को एक अनिवार्य प्रश्नपत्र के रूप में सम्मिलित किया गया है। जिसमें पुस्तकालय विज्ञान विषय के निम्न पक्षों को सम्मिलित किया गया हैः

1. पुस्तकालय और इसकी सेवाओं का परिचय।
2. शिक्षा में पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका।
3. अनुसंधान एवं तकनीकी हस्तांरण।
4. ग्रंथालयों में प्रयोग होने वाली वर्गीकरण पद्धति एवं पुस्तकालयों का संगठन।
5. सूचना के स्रोत – प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक।
6. सारकरण एवं अनुक्रमणीकरण की जटिलता एवं विभिन्न सारकरण एवं अनुक्रमणीकरण सेवायें जैसे– सांइस साईटेशन इन्डेक्स, बायोलॉजिकल इन्डेक्स, केमिकल इन्डेक्स, केबी इत्यादि।
7. संदर्भ स्रोतों से सूचनायें खोजना।
8. साहित्य सर्वेक्षण।
9. उद्धहरण तकनीक एवं वाड्मय सूची का निमार्ण।
10. सी डी रोम का उपयोग।
11. डाटाबेस, ऑनलाईन पब्लिक ऐक्सेस केटेलॉग बेब ओपेक का प्रयोग।
12. कम्प्यूटरीकृत पुस्तकालय सेवाओं का प्रयोग।
13. इन्टरनेट का प्रयोग एवं विभिन्न सर्च इंजन एवं उनमें उपलब्ध सूचना स्रोत।
14. ई–सूचना स्रोत एवं उनकी अभिगम की विधि।

इस पाठ्यक्रम को सम्मिलित करने का मुख्य उद्देश्य संबंधित विद्यार्थियों और शोधार्थियों को अपने विषयानुसार अध्ययन एवं अनुसंधान संबंधी आवश्यक सूचना स्रोत एवं सूचनायें को अभिगम करने में सक्षम बनाना है। कृषि एवं संबद्ध विषयों की शिक्षा में इस पाठ्यक्रम को सम्मिलित करने के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार हैंः

1. पुस्तकालय एवं पुस्तकालय सेवाओं से विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों को परिचित कराना।
2. कृषि एवं संबद्ध विषयों के उपयोगकर्ताओं में अपनी विषय संबंधी सूचनायें अभिगम करने हेतु कौशल विकास करना एवं सूचना अभिगम हेतु समर्थ बनाना।
3. अपने विषय से संबंधित सूचना एवं ज्ञान स्रोतों से अवगत कराना।
4. अपने विषय से संबंधित साहित्य सर्वेक्षण हेतु ज्ञान उपलब्ध कराना।
5. सूचना खोज रणनीति बनाने हेतु सक्षम बनाना।
6. पुस्तकालयों में उपयोग होने वाले आधुनिक संसाधनों एवं तकनीक से परिचित कराना।
7. ई–सूचना स्रोत, आनलाईन सूचना सेवायें, विभिन्न विषय संबंधी डाटाबेस एवं ग्रंथपरक सूचना सेवाये, अर्न्तराष्ट्रीय सूचना सेवायें, संस्थागत रिपोजिटरी, पुस्तकालय का आनलाईन पब्लिक ऐक्सेस केटेलॉग, बेब ओपेक इत्यादि के उपयोग हेतु सक्षम बनाना।
8. सी डी–रोम, इन्टरनेट एवं विभिन्न सर्च इंजन एवं उनमें उपलब्ध सूचना स्रोत, डिजिटल पुस्तकालय,

ओपेन सोर्स सूचना स्रोत इत्यादि से अपने विषय संबधी सूचनाये खोजनें में सक्षम बनाना।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के सभी पक्षों के अध्यापन का कार्य कृषि विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों के द्वारा ही किया जाता है। पुस्तकालयाध्यक्ष पुस्तकालय के विभिन्न कार्यो के साथ उक्त प्रश्न पत्र का अध्ययापन एवं परीक्षा संबधी कार्य भी करते है।

कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रमुख कार्यः

1. कृषि एवं संबद्व विषयों की शिक्षा एवं अनुसंधान के पाठ्यक्रम में सम्मिलित अनिवार्य प्रश्न पत्र का अध्यापन।
2. पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के आधुनिक उपकरणों, तकनीक एवं नवीनतम सूचना सेवाओं का प्रशिक्षण।
3. अनुसंधान कार्यो हेतु तकनीकी के हस्तांतरण में सहायता।
4. विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा अन्य उपयोगकर्ताओं को उनके विषय संबंधी सूचना स्रोतों की अभिगम में सहायता।
5. पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न सूचना स्रोतों से उपयोगकर्ताओं की सूचना संबंधी आवश्यकता अनुसार सूचना की पुर्नसंपुष्टि (रीपेकेजिंग) करना।
6. सामायिक अभिज्ञता सेवा के माध्यम से शोध पत्रिकाओं तथा शोध लेखों की सूची का निर्माण एवं इसका परिसंचरण।
7. चयनित प्रसारित सूचना सेवा संबंधी विभिन्न कार्य ।
8. उपयोगकर्ताओं को उनके विषय में सूचना स्रोतों से अद्यतन रखने के लिये कृषि एवं संबद्ध विषयों में उपलब्ध नवीनतम सूचना स्रोतों की वाड्यमय सूची का निमार्ण।
9. पुस्तकालय में हुई उन्नति एवं विकास कार्यो तथा नई तकनीकि के प्रचार–प्रसार हेतु न्यूज लेटर एवं बुलेटिन का प्रकाशन।
10. सूचना स्रोतों को संसाधन सहभागिता के माध्यम से उपयोगर्ताओं को उपलब्ध कराना।
11. संस्थागत रिपोजिटरी के द्वारा संस्था की बौद्धिक संपदा को संग्रहित करना एवं आनलाईन उपलब्ध कराना।

प्रत्येक कृषि, वानिकी एवं संबंद्ध विषयों विश्वविद्यालय एवं उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों के पुस्तकालयों में पुस्तकालयाध्यक्षों को इन महत्वपूर्ण कार्यो के साथ प्रतिदिन के दैनिक कार्यो और गतिविधियों जैसे– आवाप्ति, परिग्रहण, वर्गीकरण एवं सूचीकरण एवं अन्य तकनीकी कार्य, परिसंचरण कार्य, प्रबंधन एवं संगठन इत्यादि कार्यो का दायित्व का भी निर्वाहन करते हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा समस्त कार्यो का निर्वाहन इस प्रकार से किया जाता है, कि अध्ययन, अध्यापन एवं शोध कार्यो को पुस्तकालय सेवाओं के माध्यम से प्रभावशीलता लाकर संस्था के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्षों की ई–सूचना स्रोतों की उपयोगिता में भूमिका

ई–सूचना स्रोतों की उपयोगिता आज के युग में सभी विषय क्षेत्रों में अनिवार्य हो गयी है। आज के इस सूचना संचार क्रांति के युग में समाज के प्रत्येक क्षेत्र में ई–सूचना स्रोतों का महत्व बढ़ा है। प्रत्येक उपभोक्ता को उसके विषय एवं आवश्यकता की सूचनाओं से अद्यतन रखने के लिये अनिवार्य है, कि उसके विषय एवं आवश्यकता की सूचनाओं को चयनित, वर्गीकृत एवं आवश्यकता योग्य तैयार करके उपलब्ध कराया जाये। यह कार्य विशेष रूप से पुस्तकालय कार्य में दक्ष कर्मचारियों और पुस्तकालयाध्यक्ष के द्वारा किया जाता है। पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका इस दिशा में अत्यन्त महत्वपूर्ण होती हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष पुस्तकालय विज्ञान के नियमों का पालन करते हुये अपने उपभोक्ताओं को उनकी सूचना से निरंतर अद्यतन रखने का महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य कार्य करता है।

कृषि विज्ञान एवं संबद्ध विषयों में निरंतर नवीतम तकनीकी का प्रयोग होने के कारण इन विषयों के उपभोक्ताओं को उनके विषय एवं आवश्यकता की सूचनाओं से निरंतर अद्यतन रखना अत्यन्त आवश्यक है। यह कार्य पूर्व में अत्यन्त कठिन और श्रम साध्य कार्य होता था, परन्तु उस काल में भी पुस्तकालय कर्मचारी और पुस्तकालयाध्यक्षों द्वारा इस कार्य को निरंतर किया जाता था। कृषि, वानिकी एवं संबद्व विषय में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग बहुतायत में हो रहा है। वर्तमान डिजिटल युग में पारंपरिक मुद्रित सूचना के स्रोतों के स्थान पर डिजिटल एवं ई–सूचना स्रोतों का प्रदुर्भाव हुआ। इन ई–सूचना स्रोतों के अस्तित्व में आ जाने के कारण इनकी उपलब्धता एवं इनके प्रयोग संबंधी जटिलतायें भी सामने आने लगी हैं। इन सूचना स्रोतों को उपलब्ध कराने एवं इनके उपयोग संबंधी जटिलताओं को दूर करने के लिये कृषि एवं संबंद्व विषयों के पुस्तकालय कर्मचारी एवं पुस्तकालयाध्यक्ष निरंतर प्रयास करते हैं। कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्षों के द्वारा ई–सूचना स्रोतों के उपयोग में महत्वपूर्ण योगदान एवं प्रयास इस प्रकार हैं:

पुस्तकालय परिचय या दीक्षा कक्षाओं का आयोजन

नवांगुतुकों हेतु पुस्तकालय दीक्षा कक्षाओं / कार्यक्रमों का आयोजन शैक्षणिक सत्र के प्रारंभ में पुस्तकालयाध्यक्षों के द्वारा दिया जाता है। नव प्रवेषित अनेक विद्यार्थी ई–सूचना स्रोतों की प्रकृति से परिचित नहीं रहते पुस्तकालय दीक्षा कक्षाओं के माध्यम से पुस्तकालय के परिचय के साथ–साथ ई–सूचना स्रोतों की उपलब्धता एवं उपयोग संबंधी जानकारियां दी जाती है।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

पुस्तकालय में नवीनतम ई–सूचना स्रोत एवं डिजिटल सूचना एवं अन्य अपरंपारिक सूचना स्रोतो के उपयोग संबधी जानकारी देने के उद्देश्य से पुस्तकालयाध्यक्षों के द्वारा सूचना साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन समय–समय पर किया जाता है।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के अनिवार्य प्रश्न पत्र कर अध्यापन कार्य

कृषि, वानिकी एवं संबद्ध विषयों विषय क्षेत्रों में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के विभिन्न पक्षों की जानकारी देने के उद्देश्य से अनिवार्य प्रश्न पत्र के रूप

में सम्मिलित होता है। पुस्तकालयाध्यक्ष एवं अन्य पुस्तकालय सहयोगी इन पाठ्यक्रम के माध्ययम से ई–सूचना स्रोत को अभिगम्य करना, उनका पठन एवं डाउनलोड करना इत्यादि पक्षों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियों का अध्ययन कराया जाता है। इसके अलावा ई–सूचना स्रोतो से संबंधित प्रतिलिप्यधिकार एवं साहित्यिक चोरी से संबंधित नियमों एवं कानूनों की जानकारी दी जाती है।

मुद्रित सूचना स्रोतों का डिजिटलीकरण

वर्तमान समय में पुस्तकों एवं अन्य सूचना स्रोतों को सीमित स्थान के कारण संग्रहित करना एक दुर्लभ कार्य हो गया है। इस कठिनाई से बचने के अब सूचना स्रोतों को डिजिटलीकरण करना नितांत आवश्यक हो गया है। यह महत्वपूर्ण कार्य कृषि विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष एवं सहयोगियों के द्वारा ही किया जाता है।

वेबसाइट के माध्यम से ई–सूचना स्रोतों की उपलब्धता

उपयोगकर्ता ई–सूचना स्रोतों को सहतजता से उपयोग कर सके इसके लिये पुस्तकालयाध्यक्षों के द्वारा विश्वविद्यालय/ पुस्तकालय की वेबसाईट में अलग से एक एप्स का निमार्ण किया जाता है। इस एप्स की सहायता से उपयोगकर्ता सहजता से ई–सूचना स्रोतों का उपयोग कर सकता है।

संस्थागत रिपोजिटरी का निर्माण

कृषि विश्वविद्यालयों में अनुसंधान कार्यो को प्रमुखता से किया जाता है, एवं इन शोध कार्यो से संबंधित शोध पत्र, शोध प्रबंध, पुस्तकें एवं अन्य प्रकार के साहित्य का उत्पादन होता है। इस प्रकार उत्पन्न यह सभी साहित्य संस्था की बौद्धिक संपदा माना जाता है। पुस्तकालयाध्यक्ष संस्था की इस बौद्धिक संपदा को विश्वविद्यालय/ पुस्तकालय की वेबसाईट के माध्यम से उपलब्ध कराने के लिये संस्थागत रिपोजिटरी का निमार्ण करता

ई–सूचना सेवाओं के प्रति उपयोगकर्ताओं को सक्षम बनाना

सामायिक अभिज्ञता सेवा एवं चयनित सूचना प्रसार सेवा के द्वारा पुस्तकालयाध्यक्ष सामायिक ई–सूचना स्रोतों को अपने उपयोगकर्ताओं को अवगत कराता है, वहीं प्राध्यापको, विषय विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, अनुसंधानकर्ताओं को चयनित सूचना प्रसार सेवा के माध्यम से उनके विशय शोध क्षेत्र से संबंधित विशिष्ट सूचना उपलब्ध कराते हैं।

ऑनलाइन ई–ग्रंथसूची के माध्यम साहित्य सर्वेक्षण में सहायता

अनुसंधान में साहित्य सर्वेक्षण एक प्रमुख चरण होता है। साहित्य सर्वेक्षण हेतु ग्रंथसूची अनिवार्य उपकरण होती है। मुद्रित ग्रंथसूची को अद्यतन करना कठिन कार्य होता है। परन्तु इसके स्थान पर ई–ग्रंथसूची को सहजता से अद्यतन रखा जा सकता है। कृषि विश्वविद्यालयों में चूंकि अनुसंधान कार्य प्रमुखता से होते है, इस कारण यहां विषय से संबंधित साहित्य का अवलोकन करना अनिवार्य हो जाता है। पुस्तकालयाध्यक्ष ई–ग्रंथसूची सेवा के माध्यम से इस कार्य में सहायता करता है।

कृषि विज्ञान, वानिकी एवं संबद्ध विषयों के शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थानों में मुख्य रूप से एग्रिस, एग्रीकोला, एग्रीकल्चर एण्ड नेचुरल रिसोर्सेस, केब एब्सट्रेक्ट, फूड सांइस एण्ड टेक्नॉलाजी एब्सट्रेक्ट, बायोसिस इत्यादि प्रमुख ग्रंथपरक डाटाबेस एवं ग्रंथपरक सूचना सेवाये है। इन विषयों के विद्यार्थी, प्राध्यापक, वैज्ञानिक एवं शोधार्थीयों पुस्तकालयाध्यक्ष भली–भाँति परिचित कराता है, एवं उपयोग संबंधी आवश्यक जानकारियां भी देता है।

इस प्रकार पुस्तकालयाध्यक्षों के ई–सूचना स्रोतों की उपयोगिता हेतु महत्वपूर्ण योगदान एवं प्रयासों से कृषि एवं संबद्ध विषयों से जुड़े प्राध्यापकों, विद्यार्थियों, वैज्ञानिकों, विषय विशेषज्ञों एवं शोधार्थियों के अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष

कृषि, वानिकी एवं इनके संबद्ध विषय क्षेत्रों के अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान कार्यो का प्रभाव कृषि, वानिकी, मत्स्यकी, पशुपालन एवं इनसे उत्पन्न खाद्य पदार्थो के उत्पादन पर पड़ता है। इन विषयों के अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान को पूरा करने हेतु परंपरागत मुद्रित सूचना स्रोतो के साथ–साथ ई–सूचना स्रोतों का उपयोग बहुतायत में बढ़ गया है। मुद्रित सूचना स्रोतों के स्थान पर ई–सूचना स्रोतों का अधिक उपयोग होने का कारण इनकी प्रकृति है। ई–सूचना स्रोतों से सूचनायें सहजता, परिशुद्धता एवं तीव्रता के साथ प्रेषित और प्राप्त की जा सकती। ई–सूचना स्रोतों से सूचनाओं के संचरण एवं उपयोगिता उक्त विशय क्षेत्रों के शैक्षणिक संस्थानों के पुस्तकालयाध्यक्ष की पुस्तकालयाध्यक्षता पर निर्भर करता है। पुस्तकालयाध्यक्ष ई–सूचना स्रोतों की उपयोगिता को बढ़ाने के लिये अनेक प्रयास एवं कार्य करते हैं, जैसे ई–पुस्तकालय को विकसित करना, उपलब्ध विभिन्न कन्सोटियम के माध्यम से ई–सूचना स्रोत उपलब्ध कराना, मुक्त स्रोत ई–सूचना स्रोत का उपयोग कराना एवं इनके माध्यम से अध्ययन, अध्यापन एवं शोध कार्यो में सहायता करना।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Deshmukh, P P. "Role of An Agriculture university Library in Technology Transfer in Agriculture." Anals of library and documentation. 27.1-4 (1980): 34-40. Web 14 Mar 2018.*
2. *Bansal, Jivesh. "Status of Libraries of Agriculture Research (ICAR) Institute in Haryana: A Survey." International journal of Information Disseminiation and technology.1.4 (2011) .*
3. *Chatterjee, K and Dasgupta, Sabuj. "Towards Indian Agriculture Information: A Need Based Information Flow Model." International Journal Humanities and social Science. Innovation. 5.3 (2016). Web 16 Mar 2018.*
4. *Day, Nabin Chandra. "Prospects of Concortia based resources sharing among the agricultural university of North East India with special reference to central agricultural university Imphal." 2017. Web 26 May 2018.*

5. *Sing, Neena. "Restructuring LIS User Education Coursr in Universities of Agricultuire Sciences. Annals of Library and information Studies.53.3 (2002). 134-142. Web 23 Jun 2018.*
6. *Ankrah, Ebenezer and Atuase, Diana. "The use of Electronic resources by postgraduate students of the university of Caps." Library Philosophy and Pratice . 1632. 2018. 1-37 Web 25 Jun 2018*
7. *Uplaonkar, Shilpa. "Use of ICT for accessing e-resources by the students of university of agricultural sciences Dharwad." International Journal of Applied Research. 4.3 (2018). 31-34. Web 25 Jun 2018.*
8. *Depatment of agriculture Research and Education. 2017. Web. 19 Jun 2018 <http://www.dare.in>.*
9. *Indian Council for Agriculture Research. 2017. Web. 19 Jun 2018 <http://www.icar.org.in>.*
10. *Consortium for e-Resources in Agriculture. 2017. Web. 25 Jun 2018. <http://www.cera.iari.res.in>.*
11. *Krishikosh. 2018. Web.25 Jun 2018. <http://krishikosh.egranth.ac.in/>*
12. *Agricate.2018. Web 25Jun 2018 <http://www.egranth.ac.in/AgriCat.html>*
13. *Food and Agriculture Organization.AGRIS. 2018. Web. 30 Jun 2018. <http://www.agris@fao.org>*
14. *United States Department of Agriculture. AGRICOLA. 2018. Web. 30 Jun 2018 <http://www.agricola.nal.usda.gov>*
15. *Indira Gandhi Krishi Vishwavidyalaya. Library 2018. Web. 30 Jun 2018 <http://www.igau.edu.in>*
16. *Chhattisgarh Kamdhenu University. Library 2018. Web. 3 Jul 2018 <http://www.cgkv.ac.in>*
17. *Jawaharlal Nehru Krishi Vishwa Vidyalaya. Library 2018. Web. 30 Jul 2018 <http://www.jnkvv.org>*
18. *Indira Gandhi Krishi Vishwavidyalaya. Library 2018. Web. 30 Jun 2018 <http://www.igau.edu.in>*
19. *Nanaji Deshmukh Veterinary Science University. Library 2018. Web. 30 Jun 2018 <http://www.ndvsu.org>*
20. *Rajmata Vijayaraje Scindia Krishi Vishwa Vidyalaya. Library 2018. Web. 30 Jun 2018 <http://www.rvskvv.net>*
21. *Rajmata Vijayaraje Scindia Krishi Vishwa Vidyalaya. Library 2018. Web. 30 Jun 2018 <http://www.rvskvv.ideal.egranth.ac.in>*